International Journal of Applied Research 2023; 9(2): 161-164

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(2): 161-164
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2022
Accepted: 23-12-2022

प्रभाष कुमार
शोधाार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Corresponding Author:
प्रभाष कुमार
शोधाार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

'मरीचिका' उपन्यासक तात्विक विवेचन

प्रभाष कुमार

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2023.v9.i2c.10586

सारांश
'मरीचिका' लिली रेक द्वारा लिखल गेल, मैथिली साहित्यक सबसँ अधिक बृहदाकार उपन्यास अछि। जे दू भागमे मैथिली अकादेमी पटनासँ प्रकाशित भेल अछि, जकर प्रथम भाग पर 1982 ई० मे 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कार सेहो भेटल छनि। एहिमे सामन्तवादी प्रथा आ राजघरानाकेँ चित्रित कए लेखिका ओकर एलबम तैयार कएलनि अछि। ई उपन्यास सामन्तवादी व्यवस्थाक गुण–दोषकेँ उद्घाटित करैत अछि, तेँ एकरा सामन्तवादी आ वर्ण व्यवस्थाक समालोचना ग्रन्थ सेहो कहल जाए सकैत अछि। ई निसंदेह मैथिली साहित्यक इतिहासमे एक गोट नव कीर्तिमान स्थापित कएलक अछि। चारि पीढ़ीक विस्तृत काल सीमा ओ परिसरमे पसरल एक हजारसँ अधिक पृष्ठक ई उपन्यास मैथिली साहित्य सर्वजनाक क्षेत्रमे स्वयं एक अविश्वसनीय ऐतिहासिक घटना थिक। मरीचिकाक अर्थ होइछ 'मृगतृष्णा' अर्थात् 'भ्रम'। सामान्यतः रेगिस्तानमे दिनक समयमे दूरसँ लगैछ जे चारू कात पानिए पानि अछि मुदा वास्तवमे लग गेलासँ ओ बालूक पट–पट मैदान रहैत अछि। एहिमे मुख्य रूपसँ पिआसल मृग फँसि जाइत अछि जे ओहि ठाम जाए अपन पिपासा शान्त करब मुदा एहि मृगतृष्णामे ओ अपन प्राण तक त्यागि दैत अछि। प्रस्तुत उपन्यासक पहिल खण्डमे हीराक एहि प्रकारक मरीचिका देखाओल गेल अछि। एकटा राजघरानामे हीराक प्रवेश साधारण फूल तोड़ाक बेटीक रूपमे होइत अछि। ओहि परिवारमे हीरा दालिक हरदि जेना मिलि जाइत छथि। राजमाता आ रानीजीक परम विश्वस्त भऽ जाइछ। एतेक घरि जे सम्पूर्ण हवेलीक काजक दाईत्व आ तिजौड़ीक चाभी सेहो हिनके भेटि जाइत छैक। अपन समवयस्क राजाक बेटा नेना सरकार (राजा सरकार) सँ प्रेम करय लगैत छथि, जे आब तँ सब हमरे अछि हमही एहि घरक मलिकाइन बनब। मुदा विवाहक बेरमे फूल तोड़ाक बेटी होएबाक कारण ओकर विवाह बँसुरियासँ करा दैत छथि। इएह मरीचिका छल। जाहि घरमे ओ अपन तन–मनसँ सेवा करैत छल राजा सरकारक प्रेम संगिनी बनबाक लेल ओ तऽ बालुक टीला ज्ञात भेल।
उपन्यासक दोसर पक्ष अछि आर्थिक मरीचिका। राजा सरकार आ रानीजी जे अपन पतिष्ठा आ धनक घमण्डमे हीराकेँ तिरस्कृत करैत अछि अन्तमे अत्यन्त दयनीय स्थितिमे पहुँचि जाइत छथि। हुनक धन–सम्पत्ति, गहना–गुड़िया सब बिका जाइत अछि। हीरा अपन लगन, बुद्धि आ मेहनतिसँ आसामक शीलौंगमे तीन–तीनटा होटलक मालकीन बनि जाइत अछि आ अपन बेटाकेँ डॉक्टरी पढ़ाबैत अछि कलकत्तामे। राजा सरकारक बेटी सेहो ओहि कॉलेजमे डॉक्टरी पढ़ैत रहैत अछि। राजा सरकारक बेटी आ हीरका बेटाक बीच प्रेम–प्रसंग चलैत अछि आ अन्तमे विवाह होइत छैक। जाहिमे आर्थिक मरीचिका स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि। तेँ एहि उपन्यासक नामकरण 'मरीचिका' सटीक भेल अछि। ई उपन्यास नायिका प्रधान अछि आ नायिका हीराक सशक्त चरित्रक वर्णन एहिमे अछि। एहि उपन्यासक नामकरण 'मरीचिका' सटीक भेल अछि। ई अपन्यास नायिका प्रधान अछि एहि उपन्यासक मध्य सभटा औपन्यासिक तत्वक निर्वाह भेल अछि आ अनेक विद्वानक श्रेष्ठ समालोचनाक कसौटी पर पूर्ण उतरल।

कूटशब्द : लिखल गेल, मैथिली, होटलक मालकीन

प्रस्तावना
(1) कथानक
कथानकक दृष्टिसँ 'मरीचिका' मैथिली साहित्यक अन्यतम एवं नवीन भाव–भूमि पर आधारित अछि। मरीचिकाक प्रथम भागमे पूर्वांचलीय मिथिलाक एक उच्चस्तरीय सामन्त परिवारक कथाक वर्णन, अन्तः पुरक विशेष परिवेशमे विशद रूपेँ कएल गेल अछि। उपनिबद्ध दीर्घ कथा–वस्तुक सन्दर्भमे सामन्ती परिवारक बनैत–बिगड़ैत संबंध एवं तकर परिवर्त्तनशील अन्तर्धारा, घात–प्रतिघात, आशा–निराशा, ईर्ष्या–स्नेह अछिक एहन सूक्ष्य ओ सजीव चित्र अंकित करबामे लेखिका सफल भेलीह अछि जे मैथिली साहित्यमे अकल्पनीय छल। एकवंशीय दुइ सामन्तवादी परिवारक–शाखा सूर्यपुर ओ देवन्तीक बीच अन्तर्निहित अस्तित्व–रक्षा, ऐश्वर्य–बोध एवं पारस्परिक प्रतिशोध–प्रयासक अकल्पनीय वृतान्त लेखिकाक अद्भुत रचनात्मक प्रतिभासँ 'मरीचिका' मे साकार भए उठल अछि।

राजमाता मुरलीधरपाठकक कूटनीतिक सहायतासँ देवन्तीकेँ पराजिते नहि करैत छथि, सब प्रकारसँ ध्वस्त कए दैत छथि। एहि प्रक्रियामे छोटा सरकारक शरीरमे रोगाणु धरि पहुँचाए हुनक जघन्य हत्या कराओल जाइत अछि जाहिसँ राजासाहेब निष्कंटक भए सकथि। परन्तु राजमाताक ई आशा मरीचिका मात्र सिद्ध होइत अछि, देवन्तीक प्रतिशोध–ज्वालामे राजासाहेब अपनहुँ भस्म भए जाइत छथि, रानी ओ नवरानीक सेहो मृत्यु भए जाइत छनि, बँचि जाइत छथि राजा सरकार ओ गुणवती सुन्दरी हीरा जे राजासाहेबसँ प्रेम करैत अछि एवं एकरहिपर राजमाताक आशा आब अवलम्बित अछि। एक दोसरासँ प्रेम करितहुँ राजासरकार हीरासँ विवाह नहि करैत छथि, कारण हीरा एक साधारण फूलतोड़ाक बेटी थिक। राजासरकार एकर विवाह कराए दैत छथिन्ह बँसुरियाझा (दीनानाथ चौधरी) सँ, जाहिसँ रक्षिताक रूपमे हीराक सेवा सदैव प्राप्त होइत रहैन्हि। ओ हुनका कलकत्ता निर्दिष्ट स्थान पर अनबाक आज्ञा दैत छथिन्ह। परन्तु दीनानाथ अपन निराश ओ आहत स्वाभिमानिनी पत्नीक निवेदनसँ संवेदित–प्रेरित भए, हीराक एहन स्थान पर लए चलबाक इच्छाकेँ पुरएबाक हेतु जतए सूर्यपुराक केओ लोक नहि भेटि सकए, ओकर कोनो स्मृति शेष नहि रहए, राजा सरकारक आदेशक अल्लंघन कए, बारलोईमे ट्रेन बदलि हीराक संग आसाम विदा भए जाइत छथि।

'मरीचिका'क द्वितीय खण्डमे हीराक सर्वथा अभिनव चरित्रांकन भेल अछि। राजासरकारक विश्वासघाती प्रेमक पीड़ासँ पाथर भेलि, सामन्ती हृदयहीनतासँ आहत नारी–स्वाभिमानक मूर्त्त–प्रतिमा बनलि तथा नियति–चक्रसँ संचालित हीरा दीनानाथ संग शिलौंग पहुँचैत अछि। सूर्यपुरक स्मृति–पीड़ाकेँ पूर्ण रूपसँ बिसरबाक चेष्टा करैत ओतए ओ आर्थिक स्वातंत्र्यक हेतु संघर्ष करबामे अपन व्यवसायबुद्धि, लगनशीलता तथा प्रबन्ध–पटुताक सर्वोपरि परिचय दैत अन्ततः तीन–तीन गोट होटलक मालिक बनि जाइछ। दीनानाथ सेहो संयोगसँ अंगरेजक सम्पर्कसँ द्वितीय महायुद्ध तथा स्वातन्त्र्य–पूर्व राजनीतिक परिवर्त्तनक परिप्रेक्ष्यमे सम्पन्नताक अवसर प्राप्त कए कलकत्ता मध्य सम्पति बनएबामे समर्थ होइत छथि। हुनक एकमात्र पुत्र आनन्द एवं पालिका–पुत्री बुड़ो (मीनाक्षीघोष) उच्चतर शिक्षाक हेतु कलकत्ता जाइत छथि तँ ओतए काल–क्रममे आनन्द राजासरकारक पुत्री आनन्दिनीक प्रति आकृष्ट होइत छथि तथा अन्तमे दुहूक, बिना हीराक सहमतिक विवाह भए जाइत अछि। मीनाक्षी सेहो राजासरकार आदिसँ सम्पृक्त भए दिल्लीमे स्थायी रूपेँ ओकालति करैत अछि। दीनानाथ स्वातन्त्र्योत्तरकालीन परिवर्तित परिस्थितिकेँ ध्यानमे रखैत पटनामे स्थायी निवास बनएबाक व्यवस्था कए रहल छथि। वस्तुतः हीरामे दाम्पत्य–अनन्यता कहिओ स्थापित नहि भए सकल छल, कारण हीरा आजीवन अपनाकेँ ठगैत रहलीह, मुँहसँ कहिओ सूर्यपुरक नाम नहि लेथि, होटलक व्यवस्थामे यन्त्रवत अपनाकेँ लीन राखथि, तथापि मानसिक रूपसँ राजासरकार ओ सूर्यपुरक स्मृतिसँ कहिओ फराक नहि भए सकलीह तथा भावनात्मक स्तर पर हुनक दाम्पत्य–जीवनमे दराड़ बढ़िते गेल। भाग्य–चक्रसँ संचालित अप्रत्यक्ष रीतिएँ सूर्यपुरसँ पुनः जुड़ि गेलासँ हुनक अन्तस्तलक वण पुनः जीवित भए उठल ओ अन्तमे ओ अपनाकेँ नितान्त एकाकिनी अनुभव करए लगलीह। एहना स्थितिमे अपन व्यक्तित्वक दृढ़ताक अनुरूप, हीरा अपन पति–पुत्र सबसँ सम्बन्ध–विच्छेद कए एकसर एकाकी शिलौंगहिमे स्थायी रूपसँ रहबाक निर्णय लैत छथि। अनिश्चिय भविष्यक मोड़ पर एहि प्रकार ठाढ़ि हीराक आँखिसँ अन्तस्तलक धनीभूत अवसाद शिलौंगमे पहिल बेर बान्ह तोड़ि प्रवाहित होअए लगैत अछि।

(2) चरित्र –चित्रण

'मरीचिका' उपन्यासमे पात्र सभक चरित्रक गढ़नि बड़ अनुकरणीय अछि। एहिसँ पूर्वक उपन्यासमे पात्र सभक चरित्र–चित्रण पर एतैक जोर नहि देल जाइत छल जतैक एहिमे देल गेल अछि। एहि उपन्यासमे हीरा, राजमाता, राजासाहेब, रानीजी, राजासरकार, नवरानी, मुरलीधर पाठक, मनुदाइ, शहजादी, कदमलाल, मनीबाबू आ हुनक पत्नी शीला, दीनानाथ, मीनाक्षी, आनन्द, आनन्दिनी अछि जिबैत पात्र सभक चरित्रक निरूपण कएल गेल अछि। एहिमे सभ पात्रक चरित्र निखरि कए बाहर आयल अछि।

नारी पात्र

हीरा

हीरा एहि उपन्यासक मुख्य पात्र अछि। एहिमे ओ नायिकाक रूपमे उद्घाटित कएल गेल अछि। लेखिका विभिन्न परिस्थितिमे राखि हीराक चित्रण कएलनि अछि। बाल्यकालमे राजा सरकारक संग खेलाइत–धुपाइत यौवनमे प्रवेश करैत अछि आ राजासरकारसँ प्रेम करए लगैत अछि। मुदा विवाहक बेरमे साधारण फूल तोड़ाक बेटी होएबाक कारण हुनक विवाह दीनानाथसँ कराए देल जाइत छैक। राजासरकार हीराकेँ रखैल बनाकए राखए चाहैत छथि मुदा हीरा सन स्वाभिमानीक लेल ई मंजूर नहि। तँ ओ दीनानाथ संग शिलौंग पहुँचि जाइत अछि आ अपन व्यवसायबुद्धि, लगनशीलता तथा प्रबन्ध–पटुताक सर्वोपरि परिचय दैत अन्ततः तीन–तीन होटलक मालिक बनि जाइछ। ई उपन्यास नायिका प्रधान अछि आ एहिमे नायिका हीराक सशक्त चरित्रक वर्णन अछि। एहिमे हीराक चरित्र स्वाभिमानी, सफल व्यवसायिक, लगनशीलता आ प्रबन्ध–पटुताक रूपमे निखरल अछि।

राजमाता

राजमाता राजासाहेबक माय दृढ़ इच्छा शक्ति लोक छथि। हुनका अपन कुलक मर्यादाक पूर्ण ध्यान रहैत छनि। हुनक आदेशक बिना राजो साहेब कोनो कार्य करबाक हिम्मत नहि करैत छलाह। राजमाता मुरलीघर पाठकक सहयोगसँ देवन्तीकेँ सभ प्रकारसँ ध्वस्त कए दैत छथि जाहिसँ राजासाहेबक राज्य निष्कंटक भए सकय। मुदा से होइत नहि अछि। हुनका लोकक नीक परख छनि तँ कार्य–क्षमताक आधार पर हीराकेँ तिजौड़ी तकक चाभी दए दैत छथि।

आनन्दिनी

आनन्दिनी राजासरकार आ रत्नमायाक पुत्री रहैत अछि। ई कलकत्तामे डॉक्टरीक पढ़ाय करैत अछि ओहि कॉलेजमे जाहिमे हीराक बेटा आनन्द पढ़ैत रहैत छैक। दूनूमे प्रेम प्रसंग चलय लगैत अछि आ अन्तमे दूनूक विवाह भऽ जाइत अछि। आनन्दिनीक चरित्र सरल आ सुशील लड़कीक रूपमे निखरल अछि।

पुरूष पात्र

राजासरकार

राजासरकार (नेना सरकार) राजा साहेब आ रानीजीक एक मात्र पुत्र रहैत छथि। राजासरकारक संगहि हीरा खेलाइत–धुपाइत युवती भए जाइछ। राजासरकार हीरा दिश आकर्षित भए जाइत अछि। ओ सभकाजक लेल हीराकेँ कहैत अछि। हीरो ओकर सुख–दुखक ध्यान रखैत अछि। मुदा विवाहक समयमे ओकर विवाह फूलतोड़ाक बेटी हीरासँ नहि भए पबैत अछि। तँ ओकर विवाह दीनानाथसँ करा कए ओकरा अपन रखैल बनाकए राखए चाहैत अछि। संयोगसँ राजासरकारक पत्नी नवरानी अबैत छथि। ओ दुखित रहैत अन्तमे मरि जाइत अछि। हुनक आर्थिक स्थिति दयनीय भए जाइत छनि।

दीनानाथ चौधरी

बसुरिया अर्थात् दीनानाथ चौधरी गरीब हरैत अछि ओ राजासरकारक सम–वयस्क होएबाक कारण हुनका बाँसुरी सुनाकए मनोरंजन करैत अछि। ई अपन पढ़ाई–लिखाई छोड़ि कए बाँसुरी बजबए लगैत अछि आ संगीतक प्रति विशेष रूपसँ

आकर्षित भए जाइछ। राजासरकार हीराक विवाह हिनकेसँ करा दैत अछि। दीनानाथ हीराक निवेदन पर हुनका शिलौंग लए कए चलि जाइत अछि। हीरा आ अंग्रेजक सम्पर्कमे आबि कए दीनानाथ सेहो उत्तम व्यापारी बनि जाइत अछि। कलकत्तामे सम्पति बना लैत अछि आ खुदरा चाहक दोकान सेहो खोलि लैत अछि। एतबे नहि दिल्ली आ पटनामे सेहो सम्पति बना लैत अछि।

मुरलीधर पाठक

मुरलीधर पाठक राजमाता साहेबक राजनीतिक आ कूटनीतिक सलाहकार रहैत अछि। मुरलीधर पाठक अपन कूटनीतिक बल पर देवन्तीकेँ पराजिते नहि करैत अछि, सभ प्रकारसँ ध्वस्त कए दैत छथि। राजमाता साहेबक सम्पूर्ण राज्यक काजक देख–रेख इएह करैत रहैत अछि। हीरा हिनकेसँ पढ़ने रहैत अछि तँ हिनकामे मुरलीधर पाठक वाला सभ गुण आबि गेल रहैत अछि। हिनक चरित्र एकटा सफल कूटनीतिज्ञताक रूपमे निखरल अछि।

(3) वातावरण

मरीचिकामे लेखिका सशक्त वातावरणक निर्माण कएने छथि। वातावरणक निर्माण एतेक आकर्षक रूपसँ कयने छथि जे प्रत्येक दृश्य सजीव भए गेल अछि। लिलीरे अपन उपन्यासमे सामाजिक आ भौतिक दूनू प्रकारक वातावरणक निर्माण कयने छथि। सामाजिक वातावरणक निर्माण द्वारा कथावस्तुकेँ विशेष प्रभावोत्पादक बनाओल गेल अछि आ भौतिक वातावरणक चित्रण द्वारा पात्रक मानसिक क्रिया–कलापक सूक्ष्म वर्णन उपस्थित कयने छथि। लेखिका दूनू प्रकारक वातावरणक निर्माणमे सफल भेल छनि। मरीचिकामे चित्रित परिवेश भरल–पुरल आ सम्पूर्ण अछि। ओहिमे चित्रित पात्र सभ ओहि परिवेशमे मजगूतसँ पैर रोपि कऽ ठाढ़ नजरि अबैत अछि। हवेलीक चाहक बैसाड़ीक एकटा वातावरण द्रष्टव्य थिक–

''हवेलीक सब स्त्रीगण, बेटी–पुतहु सबकेओ आबि जाथि राजमाता साहेबसँ भेट करय। चर्चाक चानीक प्यालीमे राजमाता साहेब ले चाह बना क' अनथिन। राजमाता साहेब चाह पीबि, प्याली रसपुरबालीक हाथ क' द' देथिन। मोहनाक माय चानीक डाबर राजमाता साहेब दिस बढ़बय। देवली चानीक झारीसँ पानि बराबय। राजमाता साहेब आचमन करथि। तकरा बाद बाँकी लोक ले तामचीनीक प्यालीमे चाह अबैक। जे जतेक प्याली पीबि सकय। राजमाता साहेब अपने पान–जर्दा किछु नहि खाइत छलीह, मुदा कुचनीबला पितड़िया परातमे भरि क' पानक खिल्ली, सुपारी, जर्दा राखल रहैत छलैक। जे जतेक खाय।''[1]

(4) कथोपकथन

एहि उपन्यासमे कथोपकथन संक्षिप्त, सीमित, स्वाभाविक आ नाटकीय अछि। लेखिका संवाद योजनाक माध्यमसँ पात्रक व्यक्तित्वक स्वरूप आ चरित्र प्रकट करबामे सफल भेल छनि। मरीचिकामे सशक्त कथोपकथनक प्रयोग कएल गेल अछि। पढ़लाक उपरान्त देखबामे अबैत अछि जेना सम्पूर्ण उपन्यास नाटकीय ढ़ंगसँ आँखिक समक्ष घटित भए रहल अछि तँ ई कतहु उबाउ सन नहि लगैत अछि। एक अंश पढ़लाक बाद आगूक जिज्ञासा बढ़ल जाइत छैक। हीरा आ राजासरकारक मध्य रागात्मक प्रेमक वर्णन मरीचिका उपन्यासक प्रथम भागमे अछि। दूनू गोटेक बीच फोन पर भेल प्रेमपूर्ण वार्तालापक किछु अंश द्रष्टव्य थिक –

राजासरकारक फोनसँ हीराक निन्न टुटलनि।
हीरा फोन उठओलनि। राजासरकार बजलाह –
''हीरा, हीरा हम काल्हि ठीके आबि जाउ?''
''अहाँक जे इच्छा।''
''अहाँ की करबध?''
''हवेलीक हिसाब देखायब।''
''हमरो हिसाब लिखलहुँ अछि?''
''नहि।''
''ओहो लिखि लिय।''
''की?''
''जे सूर्यपुरक राजा अपन सब किछु हीराकेँ देब' चाहैत छथि, मुदा हीरा लेब' नहि चाहैत छथि।''
''त हिसाब त अशुद्ध होयत।''
''त शुद्ध की होयत?''
''लेबाक अधिकार हीराकेँ नहि भेटल छनि।''[2]

(5) शैली

मरीचिकाक शैली प्रवाहयुक्त अछि। लेखिका अपन उपन्यासमे वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, मूल्यांकनपरक, विचारात्मक, नाटकीय, प्रश्नोत्तर अछि प्रकारक शैलीक प्रयोग कयने छथि। हिनक वर्णन शैली बड़ आकर्षक अछि। एहिमे ठेठ शब्दक समायोजन कए भावमे लालित्य लाओल गेल अछि। सरस, सुबोध, भावगम्य भाषाक प्रयोग कए लेखिका एहि उपन्यासकेँ आओरो अधिक मर्मस्पर्शी बनाए देलनि अछि।

मरीचिका उपन्यासमे वर्णनात्मक शैलीक प्रयोग भेल अछि। लेखिका अपन उपन्यासमे वर्णन शैलीक प्रयोग जीवन्त रूपमे कयने छथि। देविघरामे उपस्थित माँ कालीक मूर्त्तिक वर्णन केहन जीवन्त रूपमे कयने छथि से द्रष्टव्य थिक–

''हीरा प्रातः काल नहा–सोना नित्य देविघरा जाइत छलीह। कालीक मूर्त्तिक सोक्षामे बैसि क' एकटक निहार' लागथि। बिहुँसैत छटा छलनि भगवतीक। जड़ी पाढ़िक लाल बनारसीमे लपटाइलि। तेहने लाल जीह दाँत तर दाबल। बुझि नहि पड़ैक जे भगवती क्रोधमे उन्मत्त छथि। हीराकेँ बुझि पड़नि जेना भगवती खलखल हँसि रहलि छथि। हीरा आँखि मूनि ध्यान करथि। ध्यानमे डूबि जाथि हीरा। हुनकर ध्यान तखन टूटनि जखन बुच्चन झा धाप पर फूलक ढ़ाकी राखथि। आँखि खोलि हीरा देखथि भगवतीक ओहिना हँसैत मूर्त्ति। हाथक खड्ग सब विघ्न–बाधाकेँ काटि देबाक आश्वासन, दोसर हाथ वरदान देबाक मुद्रामे। भगवतीक मौन मूर्त्ति सजीव बुझि पड़नि, जेना मौन भाषामे बाजि रहलि होथि – ''ले जतेक ल' सकै छैं।'' हीराक सर्वांग झुनझुना उठनि। कोनो नब स्फूर्तिसँ देह भरि जाइन।''[3]

(6) उद्देश्य

'मरीचिका' उपन्यासक उद्देश्य अछि सामन्तवादी व्यवस्थाक गुण–ढोषकेँ उद्घाटित करैत जाति आ वर्ण प्रथाकेँ खत्म करब। तँ एकरा सामन्तवादी व्यवस्थाक समालोचना सेहो कहल जाइत अछि। 'मरीचिका' मे लेखिका एकटा खसैत समान्त घराना आ तकर परिवेशक कथा विस्तारसँ कहैत अछि। एहिमे संवेगक धूरीक संग नचैत आ दर्पक हाथ प्रताड़ित होइत हीराक कथा विस्तारसँ कहल गेल अछि। एहिमे नष्ट होइत सामाजिक मूल्यसँ बान्हल पतनशील सामन्ती घराना आ परिवेशक कथा कहैत लिलीरे समाजक अनेक कुव्यवस्थाक पर्दाफास कएलनि अछि। हीराकेँ जाहि जाति–वर्ण व्यवस्थाक कारणेँ त्याग कएल गेल हीराक बेटाक लेल ओ सहज भए गेल। राजासरकार जाहि हीराक त्याग वर्ण भेदक कारण कएने छलाह आइ बेटी लेल ओकरहि पुत्र सम्माननीय आ आदरनीय भए गेल छैक। दोसर दिश समाजक अनेक अंधविश्वास, रूढ़ि एवं मान्यताक भंडाफोड़ कएल गेल अछि जाहि कारणेँ अनेक लोकक प्राण तक त्यागए पड़ैत छैक। मिथिलाक नारीक शिक्षा आ आर्थिक दृष्टिकोणसँ आत्मनिर्भर बनाएब सेहो एकर उद्देश्य अछि। लेखिका अपन उपन्यासक उद्देश्य निरूपण करबामे पूर्ण रूपसँ सफल भेल छनि।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम इएह कहब जे 'मरीचिका' निस्सन्देह मैथिली उपन्यासक इतिहासमे नवीन कीर्तिमान उपस्थित करैत अछि।

चारि पीढ़ीक व्यापक काल–सीमा ओ विस्तृत परिसरमे पसरल एक हजारसँ अधिक पुष्ठक ई उपन्यास मैथिली साहित्य–सर्जनाक क्षेत्रामे स्वयं एक अविश्वनीय ऐतिहासिक घटना थिक। एहि उपन्यासक मध्य सभटा औपन्यासिक तत्वक निर्वाह भेल अछि। एकर कथानक सामाजिक आ सुसंगठित अछि। चरित्र–चित्रणक अन्तर्गत हीरा, राजमाता, राजासरकार, दीनानाथ, मुरलीधर पाठक, आनन्द, आनन्दिनी अछि पात्र सभक चरित्रक गढ़नि बड़ अनुकरणीय अछि। वातावरणक निर्माण एतेक आकर्षक रूपमे कयने छथि जे प्रत्येक दृश्य सजीव भऽ गेल अछि आ पात्र सभ ओहि परिवेशमे मजगूतसँ पैर रोपि कऽ ठाढ़ नजरि अबैत अछि। एकर कथोपकथन संक्षिप्त, सीमित, स्वाभाविक आ नाटकीय अछि। पढ़लाक उपरान्त देखबामे अबैत अछि जेना सम्पूर्ण उपन्यास नाटकीय ढ़ंगसँ आँखिक समक्ष घटित भए रहल अछि। मरीचिकाक शैली प्रवाहयुक्त अछि तथा सहजताक संग परिशुद्ध मिथिलाभाषाक स्वाभाविक ओ प्रांजल प्रयोग भेल अछि। एहि उपन्यासक उद्देश्य अछि सामन्तवादी व्यवस्थाक गुण–दोषकेँ उद्घाटित करैत जाति आवर्ण प्रथाकेँ खत्म करब। एतबे नहि मिथिलाक नारीक शिक्षा आर्थिक दृष्टिकोणसँ आत्मनिर्भर बनाएब सेहो एकर उद्देश्य अछि। विद्वानक श्रेष्ठ समालोचनाक कसौटी पर ई उपन्यास पूर्ण रूपसँ सफल उतरल अछि।

सन्दर्भ सूची

1. रे, लिली. (1981). मरीचिका. मैथिली अकादमी, पटना, प्रथम भाग, पृष्ठ संख्या – 5.
2. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 410
3. उपरोक्त, पृष्ठ संख्या – 71